ए प्लेटोनिक लव आध्यात्मिक प्रेम • अंशु हर्ष

बोधि

ए प्लेटोनिक लव

आध्यात्मिक प्रेम

अंशु हर्ष

बोधि
साहित्य जन-जन के लिए

बोधि
साहित्य जन-जन के लिए

बोधि प्रकाशन
सी-46, सुदर्शनपुरा इंडस्ट्रियल एरिया एक्सटेंशन
नाला रोड, 22 गोदाम, जयपुर-302006
फोन : 0141-2213700, 9829018087
ई-मेल : bodhiprakashan@gmail.com

कॉपीराइट © अंशु हर्ष

प्रथम संस्करण : 2021

ISBN :

कम्प्यूटर ग्राफिक्स : बनवारी कुमावत

आवरण संयोजन : बोधि टीम

मुद्रक
तरु ऑफसेट, जयपुर

मूल्य : ₹ 150/-

A PLATONIC LOVE (POETRY) by Anshu Harsh

समर्पण

मेरी शब्द यात्रा बस तुम तक

लिखती जाती हूँ मैं
क्योंकि मुझे ऐसा लगता है
कि मुझे लिखते-लिखते
ईश्वर मिल जायेगा
और ये मुलाकात
मेरी ज़िंदगी की
मनचाही मुलाकात होगी...

अनुक्रम

आसका	9
अहसास	10
नाशवान संसार	11
अल्फ़ाज़	12
नाराज़गी	13
मेरे शब्द	14
साथ का यक़ीन	15
एक पूरा साल	16
एक अदृश्य साथ	17
मुक्त बंधन	18
तुम्हारा मुस्कुराना	19
प्लेटोनिक लव	20
तेरी रहमत की बारिश	21
तुम्हारा साथ	22
उलझन	23
कायनात की रोशनी	24
अहसास का साथ	25
हवन	26
मुलाकात	27
शृंगार	28
निडर अहसास	29
मुझमें तुम्हारा होना	30
राम और चंद्र	31
मनचाही राह	32
कण-कण में तुम	33
सोचती हूँ	34

तुम	35
एक लड़की	36
नदी के किनारे	37
परिभाषा	38
साहित्य की अहिल्या	39
शब्द दीप	40
हथलेवा	41
प्रेम भाव	42
प्रेम	43
मोहब्बत	44
प्रार्थना	45
प्रेम की चाहत	46
मनमर्जी	47
बंधन	48
अधूरापन	49
ईश्वर	50
इंतज़ार	51
तुम यूँ मिले हो जीवन में	52
थोड़ी सी बदल गयी हूँ मैं	53
सम भाव	54
राम झरोखा	55
बैराग का साथी	56
मेरी प्रार्थना	57
निडर नाराजगी	58
नई ज़िन्दगी	59
मुक्त बंधन	60
एक सवाल	61
बादलों की पगडण्डी	62
आत्म साक्षात्कार	63
तुम्हारे नाम की नाव	64
रूह की राह	65
कुछ भाव	66

तुम्हारा कुछ नहीं	67
तुम्हारी बात	68
मेरे सृजनकार	69
वजूद	70
जीवन उत्सव	71
एक ब्रह्माण्ड	72
ज़िन्दगी का मौसम	73
कलम की स्याही	74
तुम्हें आना था	75
मुलाक़ात	76
पीला रंग	77
क्यों लिखते हैं हम कविता	78
गुलज़ार	79
मेरे सवाल	80
पीले कपड़ों वाली वो लड़की	81
तुम्हें जब लिखती हूँ	83
पीला आँचल	84
अकेलापन और एकांत	85
मेरी चाहत	86
तुम मुझमें यूँ समाए हो	87
मेरे शब्द	88
वो खुद सहती है	89
प्रार्थना का बल	90
पुष्प की किस्मत	91
दस्तख़त	92
ज़िन्दगी का सफ़र	93
छुपी हुई आवाज़	94
अलबेला साथ	95
मन	96
सिलसिला	97
कान्हा	98
हार	99

प्लेटोनिक लव यानी आध्यात्मिक प्रेम...

मेरी शब्द यात्रा बस तुम तक...

बहुत गहरा लगाव, विश्वास और चाहत एक अनूठा अनुभव, जिसे समझने बैठे तो न जाने कितने गीत बन जायेंगे, कितने भाव आ जायेंगे लेकिन समझ नहीं आएगा आखिर क्या है ये?

एक लगाव जो ईश्वर की आस्था सा है, उसके दर पे दीप जलाने सा है बरसों से चल रहा है एक परंपरा की तरह। पुष्प चढ़ाना, श्रृंगार देखना इत्र की महक महसूस करना, बहुत लुभाता है, मन को सुकून देता है। जब ज़िन्दगी दर्द देती है सबसे पहले इसी से अपना दर्द साझा करने को मन करता है।

क्या है ये? प्यार या एक परिपक्व प्रेम जो घटता है जीवन में और ज़िन्दगी के मायने बदल जाते है। आकर्षण होता है लेकिन ना मुलाक़ात का भाव ना ही दोतरफ़ा संवाद। पत्थर की मूरत से भी प्रबल प्रेम का भाव निरंतर शुभ और प्रगति की कामना मन में लिए चलता है जीवन में। झरझर झरने सा बहता हुआ निष्पाप और निष्कलंक जो मीरा का भाव है, जो राधा का भाव है, जो हनुमान जी के दास होने का भाव है।

जब साथ होते है तो साथ होते है लेकिन दूर होने पर भी एक रूहानी जुड़ाव बना रहता है। ये मन का जुड़ाव है जो हर स्वार्थ से परे है। एक रूहानी रिश्ता जो मन में बसा रहता है जिससे ये मन अक्सर बाते करता रहता है एक अलौकिक अनुभूति एक खूबसूरत सूफियाना भाव जो प्लेटोनिक लव यानी आध्यात्मिक प्रेम कहलाता है।

इस कविता संग्रह की हर कविता एक प्रेममय भाव लिए है जो बात है, मन की, आत्मा की अनुभूति की जो अहसास है आध्यात्मिकता का। वो बातें जो जो अपने मन में बसे प्रभु से कोई करता है, ये बातें सुख की, दु:ख की भाव की, भक्ति की जो सहज अभिव्यक्ति है।

-अंशु हर्ष

जयपुर (राजस्थान)

आसका

मैं तुम्हारी देहरी पे जलती हुई
एक अगरबत्ती हूँ
तुम्हारा नज़रे करम हुआ तो
आसका हो जाऊँगी
वरना जीवन का अंत तो राख होना लिखा ही है।

अहसास

आसमान में उड़ते
पंछियों को देखने का अहसास
इतना नाज़ुक है
कि मन करता है
अपनी दोनों हथेलियों के बीच
थाम कर इन्हें
महसूस करूँ
वैसे ही जैसे
तुम्हारे होने को
महसूस करती हूँ
अपने मन में...

नाशवान संसार

सब कुछ तो नाशवान है
इस संसार में
वो धूप जो तुम्हारी देहरी पर जलती है
उस दीपक का घी जो तुम्हारी आरती उतारता है
वो बाती भी तो जल के खत्म हो जाती है
जो उस आरती का हिस्सा होती है
आरती को शीतल करता वो शंख भी
अंत में निर्जल हो जाता है
ये देह भी, अंत को पा जायेगी एक दिन
एक अर्जी है ... ख़याल रखना है तुम्हें
मन में बसा तुम्हें पाने का भाव
बरकरार रहे।

अल्फ़ाज़

कुछ अल्फ़ाज़ कैद है
मेरे अहसास लिए
एक डायरी में
आज उसे मैंने
जला कर
एक धुआँ उठा दिया
आसमाँ की तरफ़
वो धुआँ बादल से मिल
जब कभी बरसेगा
तो शायद तुम्हें उन बारिश की बूंदों में
मेरे साथ का अहसास मिले ।

नाराज़गी

ना चाँद से बातें होंगी
न सितारों की बिसाते होंगी
ना बादलों को मुट्ठी में पकड़ने की कवायद होगी
ना मन में जलती उस प्रेम लौ में घी डलेगा
ना कोई धूप कपूर की आरती
तुम्हारे इंतज़ार में होगी
शब्द तो ज़िंदा रहेंगे मेरे ज़िंदा रहने तक
लेकिन तुमसे रू ब रू शायद
अब मेरी कविता आखरी बार होगी।

मेरे शब्द

लिखना चाहती हूँ कुछ ऐसे शब्द
जो मज़बूत हो मेरे जज़्बातों जैसे
बिलकुल अलग अंदाज लिए
थोड़े नम आँसू जैसे
और कभी मुस्कुराते
गाते गुनगुनाते उस भजन की तरह
जो तुम्हें खुश करने के लिए गाया जाता है
या उस कीर्तन की तरह
जो एक राग में बार-बार दोहराया जाता है
वो शब्द, जिन्हें पढ़ कर
याद करे ये दुनिया
मेरे चले जाने के बाद भी।

साथ का यक़ीन

एक ख़्वाब था
तारों छाई रात के तले
मिले थे हम
एक पल के लिए....
कहा था तुमने
साथ हूँ तुम्हारे
मुझ पर यक़ीन रखना
फिर कभी नहीं मिले तुम
ना ख़्वाब में ना हकीकत में
बस उसी ख़्वाब की
उँगली थाम
चल रहा हूँ
दुनिया की भीड़ को चीरता हुआ
तुम्हारे साथ का अहसास लिए।

एक पूरा साल

बहुत लंबा सफर होता है एक पूरे साल का
शब्द बदल जाते हैं, अहसास बदल जाता है
आईना में देखो तो चेहरे के भाव बदल जाते हैं
मौसम भी तो एक सा कहाँ रहता है
बारिश कभी सर्द गर्म हवाओं से
जीने के तौर तरीके बदल जाते हैं
सफ़र बहुत लंबा तय किया है ज़िन्दगी का
सच है
मन का सोचा हुआ ना हो तो देवता बदल जाते हैं
बढ़ते हुए कदमों के साथ, साथ बदल जाते हैं
जब स्वीकार नहीं होता ये बदलाव
तो आँसू और मुस्कान के मायने बदल जाते हैं।

एक अदृश्य साथ

जब कभी मेरा मन उदास होता है
मेरी नज़रे उस सतरंगी आसमाँ की ओर
उठकर देखती है
ना जानें क्यों एक सुकून का
अहसास होता है
यूँ लगता है कोई अपना है
उन बादलों के पार
जो जीवन को रंग देना चाहता है
और मैं दूर बहुत दूर
जीवन के स्याह रंग में डूबा हुआ
उन रंगों को थामने की
असफल कोशिश करता हूँ।

मुक्त बंधन

वो मंज़र जहाँ शब्द नहीं होते
केवल भाव होते हैं
समंदर की गहराइयों में
आसमाँ की ऊँचाईयों में
धरा की विस्तृत हरियाली में
अहसास होता है
एक अदृश्य शक्ति का
महसूस होता है
शब्द विहीन साथ
एक सवाल उठता है मन में
क्यों है
मेरा यहाँ होना?
ये मंज़र देख
मुझमें आध्यात्मिक भाव जागना
शायद ये डोर है
उस अदृश्य अहसास की जो
मुझे बाँध कर रखती है
मुक्त करके भी।

तुम्हारा मुस्कुराना

तुम्हारा मुस्कुराना
जैसे आसमाँ में इंद्रधनुष का बनना
और मेरी चाहत
उस इंद्रधनुष की चुनरी बनना
ओढ़, जीवन के उस उत्सव में चली जाऊँ
जहाँ ख़ामोशी
धड़कनों की लय पर
गीत जाती है
सतरंगी चुनरी पहने इठलाती मैं
उस ताल से ताल मिलाने की
कोशिश करती हूँ
उन सुरों को
कैद करने की चाहत लिए
उस साथ-साथ आते उजाले को
अपनी मुट्ठी में बंद करने को नाकाम कोशिश करती हूँ
और ये सिलसिला शुरू होता है
सिर्फ तुम्हारे मुस्कुराने से।

प्लेटोनिक लव

शब्द मेरे पास पहले भी थे
लेकिन तुम्हारे आने से विचारों का सैलाब है
कभी लिख देती हूँ, कभी कह देती हूँ
लेकिन बहुत कुछ है जो अनकहा है
और ये अनकहा मुझे एक राह पे ले जाता है
अनजानी सी पहचानी हुई राह
वो राह जहाँ मैं खुद से मिलती हूँ
वो राह जिस पर वो सपने है जो मैंने कभी देखे नहीं
वो नज़ारे हैं जिन्हें मैंने कभी देखने की ख़्वाहिश भी नहीं की
और ये राह मुझे मेरे ही अंदर लिए जा रही है
तलाश रही हूँ इस भाव को
एक शब्द देना चाहती हूँ इस गहरे लगाव को,
अटूट विश्वास, निस्वार्थ श्रद्धा को
प्रेम का एक रूप है शायद
जो मुझे आध्यात्म की ओर लिए जा रहा है
'प्लेटोनिक लव' कह दूँ इसे...???

तेरी रहमत की बारिश

आज की तेज बारिश में
जी चाहता है
इस कदर भीग जाऊँ
कि धुल जाये सब
दर्द भरे
अहसास और जज़्बात,
इस बारिश के पानी से
एक ऐसी नदी बना दूँ
जिस पर कागज़ की नाव चलाकर
मैं पहुँच सकूँ
सपनों के गाँव में
डूब जाये हर पुरानी बात
जो नाखुशी की हो...
और इस धुली हुई
कायनात की तरह
नज़र आऊँ
मैं भी खिली हुई
बिलकुल एक नयी सी मैं।

तुम्हारा साथ

ज़िन्दगी के सच से रू ब रू होने का हौसला है
तुम्हारे साथ के अहसास में
इसीलिए तो तुम्हारा हाथ थाम
चलना चाहता है ये मन
दूर बहुत दूर तक
ज़िन्दगी के सच की तलाश में
ख़ुद के होने का कारण जानने की तलाश में
नाशवान इस देह के रूप से परे जीवन की तलाश में
मेरी माटी से बने एक साथी की तलाश में
न जाने कब साँसें थम जाये
न जाने कब ये आँखें मुँद जाये
न जाने अगले सफ़र में कौन साथी फिर मिल जाये
एक लय, एक ताल पर चलते
एक तत्व से बने मेरे अदृश्य साथी हो तुम
इस सच की तलाश में
मेरा जीवन तुम्हारा साथ चाहता है।

उलझन

संसार के कल्प वृक्ष पे
कांटों के साये में
मन की उलझनों के
कितने धागे बुने हैं
हर दिन पाने और खोने के बीच
मन की तड़पन के
अनगिनत तीर चुभे हैं
उलझता जाता हूँ
क़ायनात के धागों में उलझती ज़िन्दगी को लेकर
इस अजीब सी कशमकश में
ये ना जाने कितनी सदियों की उलझने हैं।

कायनात की रोशनी

एक दौर था
जब पंछी बन
आसमाँ मैं उड़ने की चाहत थी
लेकिन अब जीवन विस्तार समझ आया है
अब नहीं है चाहत आसमाँ छूने की
अब क़ायनात की रोशनी बन
आसमाँ को भी रोशन
करने का ख़याल मन में आया है
कोई फ़र्क नहीं पड़ता
कोई साथ चले न चले
एक अहसास है मुझे
मेरे साथ उसकी रहमतों का साया है।

अहसास का साथ

मेरे हर तन्हा सफ़र में
मेरे शब्द मेरा साथ निभाते हैं
और शब्दों का साथ निभाता है
तुम्हारा अहसास
और उस अहसास का असर
यूँ होता है कि
जो शब्द पत्थर हैं
वो तराश दिए जाते हैं
जो मिट्टी हैं
वो एक आकार पा जाते हैं।

हवन

अपार ऊर्जा
अग्नि, तप, दुर्लभ ज्योत
की सतरंगी आभा
जो है हमारे अंतर्मन की
शक्ति का पर्याय
विस्तृत विराट ब्रह्मांड की खोज
हमारी सबलता के साथ
हमारी सृजनता को साथ लिए।

मुलाकात

बहुत बरसों से एक नियम मैं हर दिन निभाती हूँ
हर दिन नियत समय पर मैं तुमसे मिलने आती हूँ

तुम देखो ना देखो मुझे, तुम सुनो ना सुनो मुझे
लेकिन मैं वादे की पक्की हूँ अपना वादा निभाती हूँ
हर दिन नियत समय पर तुमसे मिलने आती हूँ

जो पीड़ा की ज्वाला होती है वो भाव रूप हो जाती है
इसीलिए तुमसे मुलाकात का कोई पल नहीं ठुकराती हूँ
हर दिन नियत समय पर मैं तुमसे मिलने आती हूँ

अब किसी की जरूरत नहीं है बस तुम साथ हो
इस अहसास को अदृश्य जिए जाती हूँ मैं
बस इसीलिए हर दिन सिर्फ तुम्हीं से मिलने आती हूँ

तुम इंतज़ार करो ना करो कोई फ़र्क नहीं पड़ता
मुझे देख कर खुशी ज़ाहिर करो ना करो कोई फ़र्क नहीं पड़ता
सम भाव भी तो तुमने सिखाया है
बस अब वो राह जीवन की जिये जाना चाहती हूँ
इसीलिए सिर्फ तुमसे मिलने नियत समय पर आती हूँ।

शृंगार

अद्भुत चमक है आज आसमानी रंगत लिए
यूँ लग रहा है जैसे
चाँद की चाँदनी
खुद उतर आई है आज तुम्हें सजाने
और साथ लायी है एक टुकड़ा आसमान का
जो चमक रहा है उस धवल चाँदनी के बीच
नील मणि जैसा...
अद्भुत अनूठा और सरल फूलों का
शृंगार किए हो आज तो
तुम ठाकुर मेरे।

निडर अहसास

आज मैं संमदर के उस तूफ़ान में हूँ
जहाँ मन बैखौफ़ हो जाता है
नाव में भी छेद
हवाओं में भी तेजी
और एक भटकाव सफ़र में
समंदर में कूदा तो भी डूबना है
नाव में रहा तो भी
कोई रास्ता नहीं
सिर्फ तुम्हारे साथ का अहसास है
और मैं बहुत निडर
इसीलिए...
मैं आखिरी ख़्वाब मुस्कुरा के देखना चाहता हूँ।

मुझमें तुम्हारा होना

मुझमें कुछ विचारों का होना
मुझमें मेरी भावनाओं का होना
मुझमें प्रेम का होना
मुझमें एक विद्रोह का होना
मुझमें मेरे सपनों का होना
मुझमें एक संयम का होना
मुझमें एक संबल का होना
मुझमें कभी एक बेचैनी का होना
मुझमें एक सुकून का होना
मुझमें सुख दु:ख के भाव होना
मुझमें एक तलाश का होना
और इन सबके होने का कारण
मुझमें तुम्हारा होना।

राम और चंद्र

एक सवाल था मन में
एक कशमकश थी जीवन में
क्या निस्वार्थ सेवा समर्पण का
फल मिलता है...
फिर ...
चंद्रमा की बात का ख़याल आया
श्री राम से उसने सवाल उठाया
क्यों मेरी सेवा का ये फल दिया
उजली जगमग दीवाली को
अमावस की अंधेरी रात में किया
राम ने उस चंद्रमा को
ख़ामोशी से देखा
बिना कुछ कहे ख़ामोशी से
अपने नाम से उसका नाम जोड़
खुद का नाम राम चंद्र किया।

मनचाही राह

कभी-कभी मन कहता है कुछ मत लिख
सिर्फ महसूस कर
इस पल को
खुद के होने को
इस बहती हुई फागुनी बयार में
चहलकदमी करते हुए
लेकिन ये विचारों का सैलाब
एक दिशा में लिए चला जाता है
अनजानी अनकही लेकिन मनचाही राह पर।

कण-कण में तुम

मैं तुमसे कभी मिली नहीं
लेकिन तुम्हारे होने के अहसास को मैंने पाया है
तेज धूप में जब मेरे कदम जल रहे थे
सूखे पत्तों को तुमने राहों मैं बिछाया है
गर्मी का तेज जब मुझे जला रहा था
एक हवा के झोंके से तुमने मुझे सुकून पहुँचाया है
सर्द जमाव बिंदु में जब अहसास भी जम गए थे
एक टुकड़ा धूप बन तुमने राहत का अहसास करवाया है
वो जो कहते हैं कि तुम हो, नहीं हो इस जहान के
लेकिन मैंने तो तुमसे बिना मिले भी
सृष्टि के हर कण-कण में तुम्हारे होने के पाया है।

सोचती हूँ

मैं अक्सर सोचती हूँ
लेकिन अपना सोचा हुआ है कभी
ज़िन्दगी जिसकी अमानत है
उसी की सौंपी जिम्मेदारियां निभाती हूँ
ये मान कर की मुझसे बेहतर उस रब को
कोई नहीं मिला ये काम करने के लिए
तभी तो हर बात, हर दर्द, हर तकलीफ़
हर खुशी बस उसी के साथ बाँट आती हूँ
सब कुछ दिया है किस बात में कमी देखूँ
बस वो पात्रता भी दे दे मुझे
जिससे हर लम्हा मैं हर वक़्त स्वीकार करूँ
मेरे सपनों का क्या है मेरे अंदर पलते हैं
वक़्त चुराकर सबसे मैं तो उन्हें भी जी जाती हूँ
पता नहीं वक़्त इज़ाज़त दे ना दे उन्हें जीने की
आँख मूंद कर हर लम्हा खुद के मुताबिक
जीती जाती हूँ।

तुम

तुम वो हो जिसके साथ मैं
अपने जीवन की हर मुश्किल
की बात कर उसे सुलझा जाती हूँ
तुम वो हो जिसके साथ से
मेरे अंदर सुलगता हुआ हर दर्द
आराम पाता है
तुम वो हो जो मेरे हर गुण अवगुण से वाकिफ़ हो
तुम वो हो
जो शांत है समंदर सा
विस्तार लिए है आसमान का
तुम्हारे साथ मैं नर से नारायण का सफर तय कर जाना चाहती हूँ।

एक लड़की

एक लड़की जो कवितायें लिखती है
एक लड़की जो कवितायें कहती है
उसे कहाँ आते हैं छप्पन भोग बनाने
देवताओं को खुश करने के लिए
लेकिन इतनी ताकत और ऊर्जा से
सराबोर है वो
कि पत्थर पर कुंकुम का तिलक कर दे
तो वो पत्थर देव बन, बादल की तरह नर्म हो
उस पर रहमतों की बारिश कर दे
कहाँ खुश रख पाती है वो इस दौर के इंसानों को
वो लड़की जो सिर्फ कविताओं में जीती है।

नदी के किनारे

नदी के दो किनारे हैं हम
कहो कैसे मिल पायेंगे
बहाते रहेंगे बहाव को अपने साथ
लेकिन कहीं भी जुड़ ना पायेंगे
नदी के दो किनारे हैं हम
मिल नहीं पायेंगे
बूँदें बरसेंगी आसमान से जब हम पर
साथ-साथ नदिया के हम भी गायेंगे
हाँ, सागर में मिल जाने तक तेरा साथ निभायेंगे
किनारे हैं एक नदी के लेकिन कभी मिल नहीं पायेंगे
पानी का बहाव जब मुझे छू कर तुम्हारे पास आएगा
बस उस छुअन के अहसास से तुम्हें महसूस कर जायेंगे
नदी के दो किनारे हैं हम, बताओ कैसे मिल पायेंगे
हवा बहेगी जब शीतल और मंद
साथ उसके हम भी मुस्कुरायेंगे
नदी के दो किनारे हैं हम
नहीं मिल पायेंगे...
आस्था का दीया जो बहेगा
कुछ फूल बह कर
मेरी ओर भी आयेंगे
नदी के दो किनारे हैं हम
कभी नहीं मिल पायेंगे।

परिभाषा

सावन में बरस जाने के बाद
बादल सूख कर प्यासा हो जाता है
ये धरती सूरज से तप कर
नदियों समंदर के पानी को
वाष्पित कर उसकी प्यास बुझाती है
कड़ी धूप के साये में जब जमीं बंजर हो जाती है
बारिश की बूँदें फिर से उसे सुकून पहुँचाती हैं
ये प्रेम है या अहसान एक दूजे पे
मैं प्रेम और अहसान की परिभाषा में भेद कर नहीं पाया।

साहित्य की अहिल्या

यह सच है की साहित्य मेरी ज़िन्दगी में
तुम्हारे आने से पहले आया,
शायद आया भी इसीलिए कि तुम्हें आना था
डरती हूँ मैं और ये सच भी होगा शायद
गर कभी भुला कर मुझे चले जाओगे तुम
ये शब्द ये कवितायें सब छोड़ जायेंगी मुझे
और रह जाएगी
एक अहिल्या सी पत्थर देह।

शब्द दीप

शब्द दीप जैसे ही तो होते हैं
जब मन तप कर
अपनी बात कहता है
तो रोशन करता है
पढ़ने वालों को
दिल को जलाइए
लेकिन
खुद को बुझाने के लिए नहीं
ख़ुद जल कर दूसरों को
रोशन करने के लिए।

हथलेवा

तुम्हारी हथेलियों पे मैंने
अपनी दोनों हथेलियां रख दीं
मेरी छोटी सी हथेलियां
पूरी तरह समा गईं
तुम्हारे हाथों में
तुम्हारे हिस्से में जो अधूरापन है
मेरी लकीरों को कहा है मैंने
उनसे मिल
उन्हें पूरा कर आये
जिससे सब हासिल हो तुम्हें
जो तुम चाहो।

प्रेम भाव

पुरुष की मासूमियत
एक उम्र पा जाने के बाद भी
सुकून तलाशती है
स्त्री के सीने पे
और बांहों में झूल जाने में
वहीं स्त्री की परिपक्वता
बालपन में ही
एक गुड्डे को अपने
सीने से लगा
बांहों में झुलाने लगती है
स्त्री-पुरुष के प्रेम का भाव
एक सा हो नहीं सकता।

प्रेम

प्रेम की तह तक पहुँच के देखा
स्वार्थ से ज्यादा कुछ नज़र नहीं आया
क्यूँ मैं सारी उम्र उस प्रेम सगाई को निभाता आया
वो रण जीतना चाहता था इसीलिए प्रेम किया
वो जग से पार पाना चाहता था इसीलिए प्रेम किया
कुछ पाने की चाहत की सदा प्रेम की नींव बनी
क्यूँ मैंने सारी उम्र प्रेम सगाई पढ़ी
राधा को प्रेम करने में सुकून था
तो कृष्ण की शक्ति का सृजन वो प्रेम था
कुछ पाया ही तो था सबने प्रेम में
फिर वही स्वार्थ उस लेन-देन में रहा
बस यहीं सोचता रहा में आज
क्यूँ मैंने उस प्रेम सगाई को
सबसे सर्वश्रेष्ठ पढ़ा।

मोहब्बत

एक सूखा पेड़
इतना सूखा कि
हर शाख़ अपनी हरियाली
खो चुकी थी
और पास ही एक बेल
जो फूलों से आबाद थी
उस बेल ने अपनी शाखाएँ
उस सूखे वृक्ष पे फ़ैला
एक खूबसूरत मंज़र बना दिया
खुद को खो उन सूखी शाखों पे
फूलों को खिला दिया
जिस पंछी ने उस शाख़ पे
घोंसला बनाया
वो ताउम्र यहीं सोचता रहा
ये मोहब्बत है या ज़रूरत?

प्रार्थना

तुम्हारे चेहरे को
अपनी दोनों हथेलियों के बीच
रख कर
मस्तक के उस ओज को
अपने माथे से लगा देना चाहता हूँ
मेरी आँखों की चमक को
तुम्हारी आँखों की रोशनी बना देना चाहता हूँ
आती जाती साँस में जो सुमिरन है याद का
तुम्हारी साँस से वो सुमिरन मिला देना चाहता हूँ
वो जो होंठ दुआ देते हैं तुम्हें रात-दिन
तुम्हारे होंठों से निकली दुआ में उसे मिला देना चाहता हूँ
देखना अपने चेहरे को आईने में आज
दोनों हाथों को जोड़ कर एक प्रार्थना करते हुए
बस देखते रहना चाहता हूँ।

प्रेम की चाहत

प्रेम कभी चाहत नहीं रखता कुछ पाने की
प्रेम सिर्फ देना जानता है
प्रेम को नहीं चाहिए चार दीवारें रहने के लिए
वो चाहता है खुला आसमान
झील नदियाँ समंदर की गहराई
समा जाने के लिए
प्रेम नहीं देता कभी दर्द तोड़ देने के लिए
वो जोड़ता है हर टूटे हुए टुकड़े को
अपने सुनहरे मखमली हृदय से
प्रेम कभी नहीं कहता चला जाऊँगा तुम्हें छोड़ कर
तुम्हें जाना हो तो चले जाना
प्रेम रहता है एक ख़याल बन अंदर सदा
बस सुकून देने के लिए
प्रेम कभी मांग नहीं करता
कुछ पा जाने की
वो दे जाता है अपनी आखरी साँस की मुस्कराहट भी जाते-जाते।

मनमर्जी

मैंने कब कहा
ठहर जाना तुम
मेरे लिए दो पल भी
सूरज भी तो वक़्त लेकर आता है
और चाँद भी अपनी गति से चला जाता है
मेरी चाहत होती है उनसे बतियाने की
वो जग रचियता है
मेरे पहलू में कब समाता है
बस एक नज़र भर देख लेना
उस परवरदिगार का
मेरे जीवन में अनंत ऊर्जा भर जाता है।

बंधन

मैंने तुम्हें पाया है
आसमान के विस्तार में
सागर की गहराई में
उगते हुए सूरज की
ढलते हुए सूरज के प्रकाश में
सृष्टि के अंत में भी रहेगा वो साथ
साथ ना होते हुए ही
तो बताओ कहाँ मायने रह जाते हैं
हासिल हो जाने के
उन्मुक्त साथ है
बिना बंधन का
अनछुआ।

अधूरापन

अधूरी बातें
अधूरी मुस्कुराहटें
अधूरे आँसू
और अधूरे वादे
सब कुछ तो अधूरा रहा
उस अधूरी सी मुलाकात में।

ईश्वर

तुम कभी मुझे मिले नहीं
फिर भी एक विश्वास है
तुमने तो कभी पुकारा भी नहीं
फिर भी मेरे कानों में तुम्हारी आवाज़ है
तुम लाख छुपाओ परदों में खुद को
तुम्हारी ताकत
मुझ तक एक अहसास बन पहुँच जाती है
तुम्हें देखती हूँ तो बस मुस्कुराता देती हूँ
कभी पलकों के किनारे नमी महसूस हूँ
साथ के अहसास से सुकून भरी साँस आ जाती है
ईश्वर हो मेरे, मेरे इतना करीब हो
कहते नहीं हो कुछ फिर भी अज़ीज़ हो।

इंतज़ार

कुछ इंतज़ार हम साथ ले कर आते हैं
और कुछ इंतज़ार
हम ख़ुद करने लग जाते हैं
वक़्त के साथ
ये जानते हुए भी कि
इस इंतज़ार की हमें जरूरत नहीं है
उस झील में नाख़ुदा का इंतज़ार...
भी एक ऐसा ही इंतज़ार है
ये जानते हुए भी कि पंख हैं उड़ने को
पंछियों को कहाँ जरूरत है ना ख़ुदा की...
फिर भी... कुछ इंतज़ार दिल में बस जाते हैं।

तुम यूँ मिले हो जीवन में

जब से मिले हो
हर दिव्य स्वरूप तुम में देखा है
महसूस किया है
उस धैर्य और साहस को
जो हनुमान की वीरता है
जान पायी कृष्ण की लीलाओं को
जो एक पग सांसारिक
और दूसरा जग से निर्मोही सा है
बुद्ध की बुद्धिमता और वैराग्य
तो तुम हो ही
राम की सरलता से लबरेज़ तुम्हारे ख़याल
कभी कभी मुझे संदेह के घेरे में
खड़ा किये जाते हैं
मैं कभी राधा बन तुम्हारा प्रेम महसूस करती हूँ
कभी सीता बन मर्यादा की सीमाओं में कैद रहती हूँ
मीरा बन बैरागी हुई हूँ
इस सुजाता ने न जाने कितनी कविताएँ रच दी तुम्हारे लिए
एक राह नज़र आती है
जहाँ की मंजिल में मैं खुद को पा जाती हूँ
तुम यूँ मिले हो जीवन में।

थोड़ी सी बदल गयी हूँ मैं

पहले नहीं सोचती थी
लेकिन
अब सोचती हूँ तुम्हें
पहले नहीं लिखती थी
अब हर पल लिखती हूँ तुम्हें
पहले नहीं था कोई ख़्वाब
लेकिन अब है
मेरी स्वप्निल आँखें
पहले नहीं थी
कुछ पाने की ख़ुशी
ना खोने का गम
लेकिन अब
तुम्हे खोने से डरती हूँ मैं
पहले नहीं थी
नादानियाँ जीवन में
अब बहुत सी
नादानियाँ करती हूँ मैं
पहले नहीं डरती थी
तुम्हें खोने से
लेकिन अब डरती हूँ
थोड़ी सी बदल गयी हूँ मैं।

सम भाव

मैंने ख़्वाब देखना छोड़ दिया
इसीलिए नहीं कि उम्मीद छोड़ दी
इसलिए कि वक़्त और ज़िन्दगी
के बीच में पिस कर
मेरे ख़्वाब घुटने लगे थे
अब मैंने मुक्त कर दिया ख़्वाबों को
उनमुक्त आसमान में
जाओं और उस वक़्त आना
जब ये वक़्त मुझे इशारा करें
या फिर तब आना जब
ज़िन्दगी तुम्हें पुकारें
यूँ ही हर दिन पलकों पे रहोगे
तो शायद बोझिल रहेंगी मेरी आँखें
मुझे तो हर फैसला स्वीकार था
ज़िन्दगी वक़्त और ईश्वर का पहले भी।

राम झरोखा

ना जाने कितनी बार आज इस झरोखे से
बाहर झाँक कर देखा है
एक दुनिया बिल्कुल अलग
ख़्वाबों की दुनिया थी वहाँ थी वहाँ
जहाँ ना कोई ग़म है ना कोई रुसवाई
छन कर आती हुई रोशनी
मुझे तुम्हारी याद दिला रही थी
किताबों के पन्ने उड़ते हुए पन्ने
ढलती हुई शाम का इंतज़ार कर रहे थे
और रात की ओर बढ़ता हुआ वक़्त
चाँद की रोशनी को मुझ तक
पहुँचाने का रास्ता खोज रहा था
इस झरोखे के पीछे बैठा मेरा मन
तलाश रहा था एक रास्ता
जो रोशनी के कणों पे बैठ
तुम्हारी ओर जा रहा था।

बैराग का साथी

तुम मेरे जीवन के वैराग्य हो
जानते हो क्यों
तुम और तुम्हारे सोचने के भाव में
मुझे जो मिला है
वो मेरी अपनी सोच से परे है
जीवन का जिया गया हर पल
हर मुलाकात
कोई कारण है, प्रारब्ध का
तुमसे मिलना भी-एक कारण है
जिसे मेरे मन की पात्रता ने स्वीकार किया है
ज़माने की रवायत सी नहीं है मेरी चाल
तुम्हारे होने के अहसास को
आत्मसात किया है...
तुम नहीं जानते क्या दिया है तुमने मुझे
मेरी खुद से मुलाकात करवा के
मेरे जीवन को उसका रास्ता दिया है।

मेरी प्रार्थना

हर दिन मैं एक सफर करती हूँ
तुम्हारे नाम का
खुद के लिए
तुम मिलोगे जानती हूँ
पर कोई बात ना होगी
साथ दोगे तुम मेरा
इस सफ़र को तय करने में
जानती हूँ मैं
क्योंकि मेरा मन कहता है
साथ हो तुम मेरे
कई बार तुम साथ होते हो
कई बार तुम साथ देते हो
साथ होना और साथ देना
दोनों अलग अंदाज हैं तुम्हारे
सृजनकार के साथ होने का ये सफर
कामयाब रहे
मेरी प्रार्थना।

निडर नाराजगी

एक बात कहूँ
इस बार अगर रूठ कर जाओ
तो अपने जोखिम पे जाना
मैं नहीं आऊँगी तुम्हें मनाने...
तुम्हारे साथ ने जो आत्मबोध कराया
हक़ीक़त में जीना सिखाया
खुद से रू ब रू करवाया
रूह की मुलाकात ने निडर बना दिया
अब नहीं डरता मन कुछ भी खो जाने से
अब रूठने का जोखिम तुम खुद उठाना
मैं नहीं आऊँगी तुम्हें मनाने।

नई ज़िन्दगी

नन्ही कली को खिलता देख कर
ऐसा लगता है
वक़्त की डिबिया से मुक्त हो
ज़िन्दगी जब पहली बार मुस्कुरायी है
मासूम अंदाज़, कोमल अहसास
न कोई कृत्रिमता और सम्मोहक मुस्कुराहट
कितनी नाज़ुक होती हैं ये कलियाँ
जितने मेरी पलकों पे रखे ख़्वाब हैं
नर्म इतनी जैसे बादलों की आड़ से
अभी अभी बर्फ निकल कर आयी हो
कैद मुक्त हो अधखुली आँखों को
खोलने की कोशिश करती
नयी ज़िन्दगी जब मुस्कुराती है
एक सवाल आ जाता है मन में
सृजनकार की कलम में
कितनी जादूगरी समायी है।

मुक्त बंधन

दिन और रात
ज़मीन और आसमान
नदी के दो किनारे
सूरज और चाँद
भक्त और भगवान
खूबसूरत साथ और अहसास
जो मिल कर भी नहीं मिलते
लेकिन इनके साथ के अहसास से
सृष्टि को एक आकार मिलता है
अपूर्ण है जीवन की कल्पना
इनके बिना
ख़्वाब भी तो हर वक़्त
पलकों पे रहता है
क्या फ़र्क पड़ता है
किसी का साथ मुकम्मल
हो या ना हो
मोहब्बत के इस अहसास को
ये मन महसूस करता है
मुक्त रख कर और मुक्त रह कर
किसी भी बंधन से
ये ख़्वाब हर पल मेरी पलकों पे रहता है।

एक सवाल

आज तुम्हारे कई रूप नज़र आये मुझे
किसी पर काई जमीं थी
कोई कड़ी धूप में खड़ा
एक रूप बहुत सज़ा हुआ
और एक रूप में खंडित नज़र आये
हर रूप है
अपने हिस्से का मंदिर लिए
फिर घर से तुम्हें क्यों बाहर
कर देता है ये मानव खंडित होने पर
क्या वो खुद पूर्ण है?

बादलों की पगडण्डी

छोटा सा मन अक्सर सोचता था
तुम ऊपर वाले हो
बादल में रहते हो
तुम्हें पाने का कौतुहल
सदा से रहा है मन में
यूँ तो अब
एकांत में अहसास हो तुम
फिर भी मचलते हुए
बाल सुलभ मन ने
देखो आज बादलों की पगडण्डी
बनवायी है तुम तक पहुँचने की।

आत्म साक्षात्कार

ख़्वाब और ख्वाहिशें ख़त्म हो जाती हैं
लेकिन एक अनंत सोच जन्म ले लेती है
मन की गहराइयों में
जब आसमां कहता है
उसे जमीं की जरूरत नहीं
ना बारिश की बूँदों के ठहराव के लिए
न क्षितिज पे मिलने के लिए
तब जो विचार जन्म लेता है
वो खुद से मुलाकात होती है
और तुम माध्यम हो
उस आत्म साक्षात्कार के।

तुम्हारे नाम की नाव

ये संसार सागर और जीवन
इसमें बढ़ते हुए कदमों को
संभालती नैया
बचपन की नादानी
सोलहवें साल का अल्हड़पन
उम्र के साथ आता बड़प्पन
अपार प्रेम कभी नफरत का आभास
कभी साथ का विश्वास
कभी अकेलेपन के बीच
बढ़ते हुए कदमों को संभालती
मेरे संसार सागर में तुम्हारे नाम की ये नाव।

रूह की राह

ज़िन्दगी वो जगह है
जहाँ रहने के कई
क़ायदे कानून हैं
वहीं पेचीदा नियमों में
बंध जाती है ज़िन्दगी
जहाँ हमें लगता है
घुट गयी हैं साँसें
एक संघर्ष का अहसास होता है
कभी-कभी गुस्सा बेहिसाब होता है
लेकिन जानते हो रूह का कोई नियम नहीं होता
चली जाती है अपनी रौ में
उड़ती हुई कही
जानती है वो भी कि
कोई अपना नहीं होता
प्यार जो खुद अधूरा शब्द है जीवन का
कोई क्या उसे पूरा कर पाएगा
करो तो इबादत करो
जीवन तभी सफल सार्थक हो पायेगा
मेरी रूह की राह आज़ाद है
उसे कोई कभी समझ भी न पाएगा
छोड़ दिया मैंने ज़िन्दगी को सोचना
बस कुछ जिम्मेदारियां हैं
जिन्हें यह जिस्म मरते दम तक निभाएगा।

कुछ भाव

कुछ अहसास
एक ख़ामोश आवाज़
तुम्हारा शृंगार
कुछ मेरे भाव
कुछ बोल
कुछ मुलाकातें
कुछ मुस्कुराहटें
कुछ सपने
कुछ सवाल
कुछ जवाब
कुछ जज़्बात
और पाक़ीज़ा से रिश्ते
और खो गए हैं शब्द
इन सभी को एक आकार देने में।

तुम्हारा कुछ नहीं

मेरे शब्द
मेरे अर्थ
मेरा मन
मेरे जज़्बात
मेरे सपने
मेरी बातें
मेरे सवाल
मेरे जवाब
मेरे आँसू
मेरी मुस्कराहट
तुम्हारा कुछ नहीं?

तुम्हारी बात

हर दिन कुछ टूट जाता है मन में
और मैं उस टूटे हुए टुकड़े को
फिर से जोड़ने की कोशिश में
न जाने कितने ताने बाने बुनती हूँ
क्योंकि तुम कहते हो न
हर टूटे हुए टुकड़े से एक नव सृजन होता है
एक नयी आशा ले कर नई परिभाषा ले कर
उस टूटे हुए टुकड़े की नई कहानी लिखती हूँ
और अब हर दिन नई कहानी बन कर
मेरे सामने आता है
मन का वो टुकड़ा
जिसके टूटने से मैं
डूब जाया करती थी
ग़म के दरिया में।

मेरे सृजनकार

ख़्वाब, हसरतें और मुस्कुराहटें
पलकों की चिलमन से जब
सब कुछ टूटता नज़र आ रहा है
सौंप देना चाहती हूँ मैं खुद को
एक सृजनकार की हथेलियों में
जो मेरे हर टूटे हुए अंश से नव निर्माण कर
मेरे हर कतरे को खूबसूरती से सजाएं
बिखरने ना दे मेरे टूटे हुए वजूद को
अपनी हथेलियों की अंजूली में भर
एक नए बहाव की ओर बहा आये।

वज़ूद

पानी की बूँद सा वज़ूद
जीवन नदिया में बहता जाता
संसार सागर की लहर बन जाता
कभी पहाड़ों से झरना बन गिरता
कायनात को ख़ूबसूरत कर जाता
नन्ही सी बूँद ही तो हूँ
जीवन की समाप्ति पर
याद बन किसी की आँखों में समा जाता
फिर से सृष्टि बीज रूप हो
उसी एक बूँद रूप को पा जाता।

जीवन उत्सव

शब्द तो पहले भी धड़कते थे मेरे दिल में
पहले भी कहते थे अपने मन की बात
लेकिन वक़्त की रंजिशें सहकर
कुछ परतें उतरती हैं मन की
उनमें बसे हौसलों से मिल
वक़्त के साथ
खुद को और तराश कर
मैं खुद एक नई कविता बन सामने आई हूँ
ज़मीन पर चलने का हौसला तो पहले भी था मुझ में
लेकिन अब आसमाँ में उड़ने का हुनर पहचान पाई हूँ
अंतर्मन की गहराइयाँ हैं मुझ में, मैं जानती थी
लेकिन इन उतरती हुई परतों के कारण
उनमें झाँकने का हौसला जुटा पाई हूँ
खोने पाने की खुशी और ग़म से परे
ज़िन्दगी के हर पल को
एक उत्सव बनाना सीख पाई हूँ।

एक ब्रह्माण्ड

एक ब्रह्माण्ड है मेरे अंदर
जिसमें बसे समंदर की
गहराइयों में
डूब जाते हैं मेरे सारे विचार
और मेरे मन के आसमान में
अनवरत उड़ती रहती हैं मेरी हसरतें
अपनी मंजिल को पाने की आस लिए
इन दोनों के बीच
जो जमीन है
उस पर खड़ा हूँ मैं
अपने अस्तित्व को साथ लिए
एक रूहानी अंदाज़ में।

ज़िन्दगी का मौसम

ज़िन्दगी के मौसम के अनुरूप
मैं पुकारता रहता हूँ
कभी बादलों को
कभी बरसात को
कभी खुशनुमा ठंडी हवाओं को
तो कभी तेज़ बरसती घटाओं को
पुकारता रहता हूँ मैं
पहाड़ों पर झुके बादलों को
और कभी रुई के नर्म फाहे से बर्फ को
अपनी मौज में बहते समंदर को
और उसमें जा कर मिलती नदी को
पुकारता रहता हूँ उस झरने को
जो पहाड़ के सहारे खूबसूरती से गिरता है
मेरी यह पुकार
हर बार एक नए सफर का रास्ता बताती है
इंतज़ार है मुझे उस सफ़र का
जिस सफ़र में ये सब मुझे पुकारेंगे
देंगे पनाह मुझे खुद में
और ये सफ़र होगा
एक अनंत सफर
एक नई राह की ओर।

कलम की स्याही

दर्द को कलम की स्याही बना कर
उतार लो कागज़ पर
मुट्ठी में लेकर
उसे
दफ़न कर दो
किसी रेत के समंदर में
कोई कहाँ सुनता और समझता है
किसी का दर्द
ना मैं ना वो न कोई और
और देखो
ये जो बिन पत्तियों के सूखे
बेजान पेड़ नज़र आते हैं ना
यहीं दर्द की दास्तां है
जब ज़िन्दगी का दर्द विस्तार पा लेता है
और
क़ायनात सुनती है।

तुम्हें आना था

मेरे जीवन में दुख आया
क्योंकि तुम्हें आना था
मेरे जीवन में हर कदम संघर्ष रहा
क्योंकि तुम्हारे होने का अहसास मुझे करना था
अब तुम रच बस गए हो मेरी हर साँस में
फिक्र मत करो
नहीं भूलूंगी तुम्हें
मैं कुंती की तरह तुम्हें याद करने के लिए
दर्द नहीं माँगना चाहती
मैं तो तुम्हारे साथ से
एक सफर तय कर जाना चाहती हूँ
जो नर से नारायण हो जाने का सफर है
जीवन उत्सव कर जाना चाहती हूँ।

मुलाक़ात

जानते हो एक सुकून होता है
तुमसे मुलाकात में
भले ही शब्द न हो
कोई बात ना हो
बस मेरा ख़ामोशी से कह देना
और तुम्हारा सुन लेना
काफ़ी है मेरे लिए
कठिन वक़्त में ये मुलाकात दे कर
जो अहसास किया है ना
सबकी तरह जताना मत...
जानती हूँ मैं नहीं जताओगे तुम
क्योंकि तुम इंसान नहीं मेरे देवता हो
और जानते हो तुम
जिस दिन छोड़ भी दोगे मेरा साथ
मिट जाऊँगा मैं
एक क्षण में
लेकिन अग्नि स्नान कर
लौट आऊँगा फिर तुम्हारे पास
कभी न लौट जाने के लिए।

पीला रंग

एक बार मिल जाने के बाद
कुछ रंग जीवन में छूटते नहीं हैं
ये पीला रंग देखो ना
जो तुम्हारे पीताम्बर का रंग है
उगते सूरज के साथ तुम्हारी याद दिलाता है
जीवन का उल्लास बताता है
और ढलती हुई उदास शाम भी तो
उसी रंग में ढल जाती है
जहाँ नज़र जाती है
खिलते हुए पीले फूल नज़र आते हैं
और ये सूखी हुई पेड़ से झड़ती हुई पत्तियां
तुम्हारे बैराग का रंग बताती हैं
कैसे मान लूँ कि तुम नहीं हो मेरे साथ
ये सृष्टि हर वक़्त हर लम्हा मुझे तुम्हारी
याद दिलाती है।

क्यों लिखते हैं हम कविता

तब जब हमारी बात सुनने वाला कोई नहीं होता
या तब जब उसे समझने वाला कोई नहीं होता
या तब जब दर्द दस्तक देता है दिल के दरवाज़े पे
या ख़ुशी के कदमों की आहट होती है
मन की दहलीज पे
या तब लिखते हैं जब मोहब्बत महसूस होती है
मन की गहराइयों में
या फिर तब
जब हसरतें करवट लेती हैं
ख़्वाबों की तन्हाइयों में
तब जब मन की आशाओं को
कोई दरकिनार कर साथ चलता जाता है
पता नहीं क्यों लिखते हैं हम कविता
शायद उस अहसास को लिखने के लिए
जो कभी था ही नहीं।

गुलज़ार

तुमसे मिली ज़िन्दगी को मैंने बोया
और मैं एक लता की तरह विस्तार पाती रही
तुम मेरे जीवन वृक्ष बन
मेरा साथ निभाते चले गए
मन में जो बीज रोपे थे
तुम्हारे साथ से
मौसम खुशगवार हो गया
बारिश की बूँदें यूँ गिरी हम पर
एक छोटा सा पौधा गुलज़ार हो गया।

मेरे सवाल

बहुत सवाल है ठाकुर तुमसे
क्यों?
मैं भी नहीं जानती
लेकिन जानना चाहती हूँ
सब जवाब
क्योंकि
कोई अहसास यूँ ही नहीं होता कभी
न दर्द का ना प्रेम का
न नफरत का न ख़ुशी का
सुना है मैंने दिल को दिल से राह होती है।

पीले कपड़ों वाली वो लड़की

वो मुस्कुरा कर हर सुबह का स्वागत करती थी
चाय की जगह वो, दूध में पताशा मिला के पिया करती थी
पीले कपड़ों वाली वो लड़की एक अलग अंदाज में जिया करती थी

ख़ामोश सी बातें और गुनगुनाती सौगातें
वो मेरे साथ कभी-कभी कुछ बाँट लिया करती थी
पीले कपड़ों वाली वो लड़की निराले अंदाज में जिया करती थी

दिल नहीं दुखाती थी किसी का
हर मन में राम नाम का अलख जगाने की
ताकत रखती थी
पीले कपड़ों वाली वो लड़की
अपने सूफ़ियाना अंदाज में जिया करती थी

लिखती थी वो गाती थी वो
सिर्फ बंद कमरे में
जबकि जमाने पे छा जाने का हुनर रखती थी
पीले कपड़ों वाली वो एक जमाना अपने अंदर रखती थी

हर सवाल का जवाब होता था उसकी कहानी में
मेरी हर बात पर वो हँस कर
अपनी चमकती हुई आँखों से मुझे देखा करती थी

पीले कपड़ों वाली वो लड़की
अपनी बातों में सदियां रखती थी

कहना चाहती थी मुझे बहुत कुछ
ऐसा कभी कभी लगता था मुझे
कहती थी तुम नहीं समझोगे मुझे
पीले कपड़ों वाली वो लड़की
जीता हुआ आध्यात्म लगती थी

बहुत याद आती है उसकी बातें वो मुलाकातें
शायद अपनी ज़िन्दगी वो मेरे करीब रखकर देखती थी
पता नहीं क्यों लगता है मुझे
पीले कपड़ों वाली वो लड़की अब मेरी हर साँस में जिया करती है।

तुम्हें जब लिखती हूँ

तुम्हें लिखने के लिए ना मुझे वक़्त चाहिए
ना शब्द ढूँढ़ने पड़ते हैं
तुम्हें जीती हूँ मैं
हर लम्हा हर पल
और बताओ
जीते हुए लम्हे को
लिखना मुश्किल है भला?
तुम तो खुद ही
स्याही हो मेरी कलम की
भावना हो मेरे छोटे से मन की
खुशी हुई बहुत मेरे नाज़ुक मन को
ये जानकर कि मेरे शब्दों को
तुम स्वीकारते हो।

पीला आँचल

झुलसती गर्मी में कौन देख पाया है
अमलताश के उस पीले फूल को
तेज़ आँधी में कौन देख पाया है
उड़ती हुई पीली धूल को
पेड़ पर सूखी हुई वो पत्ती भी तो कहाँ लिखी जाती है
कौन शब्दों में बांध पाया है सृष्टि के विस्तृत रंग को...
एक हवा सी, उड़ते बादल सी, बहती नदी को
कौन बांध पाया है
समंदर की उस मचलती लहर को...
एक अहसास तुम्हारे साथ होने का
समझ आया है
मैं लिखूँगा उस पीले आँचल की सुगन्ध को...

अकेलापन और एकांत

तुमसे अक्सर अकेले में बातें होती हैं
या फिर वो एकांत होता है
जब शब्द का अर्थ ढूँढा तो समझ आया
अकेलापन और एकांत
काफी समानता है दोनों में
लेकिन
फ़र्क है दोनों की तासीर में
अकेलेपन में दर्द है
और एकांत में आनंद
दर्द में मत रहो आनंद में रहो
मौज में रहो
आनंद लो एकांत का
ख़ामोशी से
सच्चे बंदे को नसीब होती है
ये कैफ़ियत ख़ामोशी की।

मेरी चाहत

कभी-कभी मन करता है ऐसा कुछ लिखूँ
कि सब कुछ बदल जाये
सपनों और किस्मत की जंग में
खो गया मेरा हर अहसास
अब मुझे रौनकें पसंद नहीं
मेरा उत्सव है
अब मेरा एकांत में बैठ जाना
मेरे उसूलों से
बनावटी उसूलों का टकराव
मेरी चाहतों का हर दिन
डूबते सूरज के साथ डूब जाना
फिर रात को सपनों से लड़ते हुए
सुबह नए सूरज के साथ खुद को जगाना
लम्हा-लम्हा ज़िन्दगी यूँ ही गुज़र जायेगी
मैं जैसी सुबह चाहती हूँ
क्या वो भी कभी आएगी?

तुम मुझमें यूँ समाए हो

तुम मुझमें यूँ समाए हो
जैसे कोई विचार रहता है मस्तिष्क में
मनोभाव रहते हैं इस मन में
आती जाती साँस का साथ है जैसे
आँखों में नमी का अहसास है वैसे
होंठों पर खिली हुई मुस्कान
और बताओ कहाँ अलग हो पाते हैं ये सब
आख़िरी साँस तक का साथ हो जैसे।

मेरे शब्द

तुमसे मिल
कच्ची माटी से मेरे शब्द
परिपक्व हुए
तुम्हारी हर कृति
मेरी प्रेरणा
और हर शब्द
मेरी राह का दीप है
मेरी राह में ये दीप जलते रहें
और मैं बढ़ता रहूँ
हर दिन सृजन की राह।

वो खुद सहती है

धरती माँ खुद
अपनी कहानी कहती है
इतना अन्याय सह कर भी वो
कितनी सहनशील रहती है
जिस दिन सहन की अति होती है
प्रकोप कर प्रकृति
खुद अपनी लड़ाई लड़ती है
कहती है वो सिखाती है वो
कैसे औरत की लड़ाई
वो खुद अकेले लड़ती है
इतिहास साक्षी है
चाहे सीता हो पांचाली हो
सब कुछ समर्पित कर
समय की कैद में वो बंदी सी रहती है।

प्रार्थना का बल

दौर कोई भी हो
औरत अपनी लड़ाई खुद लड़ती है
पांचाली हो कर भी
अपनी अस्मिता की जंग
वो अपनी प्रार्थना के बल पे जीतती है
सीता ने भी प्रेम समर्पण कर
वनवास ही पाया था
जब राज करने का वक़्त आया
तो अग्नि परीक्षा दी
और बिना सवाल किए
स्वाभिमान को सर्वोच्च रख
फिर वनवास अपनाया
इतिहास साक्षी रहा है
हर उस जंग का
जहाँ जीती हुई हर बाज़ी
वो वक़्त से हार जाती है।

पुष्प की किस्मत

कितने पुण्य कर इन फूलों ने जीवन पाया होगा
तुम्हें सजाने किस बाग से टूटकर आया होगा
टूट कर संवर जाने की कला तो
इसी पुष्प ने पाई है
डाली से टूटकर भी
तुम्हारे गले का हार बनने की किस्मत पाई है।

दस्तख़त

एक कविता लिखी थी
रूह पर तुम्हारी
और दस्तख़त
बस वही करना रह गया था।

ज़िन्दगी का सफ़र

ज़िन्दगी
जिसका हर अक्षर
एक घुमाव लिए हो
क्या वो ख़ुद आसान हो सकती है
भ्रम है तुम्हारा मेरी आसान ज़िन्दगी पे
हाँ फ़र्क इतना सा है
हर ज़िंदगी में
कोई हसरतों को आसमान में
लेकर उड़ता है तो
वो बोझिल हो जाती हैं
और मैं यह बोझ जमीन पे उठाती हूँ ...
ज़िन्दगी का सफ़र तो सबका एक सा है।

छुपी हुई आवाज़

सुबह जब पलकें खुलीं तो आसमान से बूँदें बरस रहीं थी
कहने को सावन की फुहार थी, पहली बारिश लेकिन
यूँ लगा जैसे आसमान रो रहा है
हवा चल रही थी, एक सुहानी पुरवाई सी
लेकिन यूँ लग रहा था जैसे
मेरे वज़ूद को बिखेरने आयी हो
गीली मिट्टी की खुशबू चारों तरफ से आ रही थी
लेकिन ऐसा लगा जैसे
मेरे ख़्वाब को दफ़न कर
जो रेत बिखरी है उसकी महक में छुप कर
मुझे कोई कुछ कहना चाहता है
शायद ये कि ये पत्थर पर नहीं रेत में दफ़न हुआ है
मुक़म्मल मौसम में फिर उग जाएगा यक़ीन रखना।

अलबेला साथ

माटी का नन्हा सा
अलौकिक सरल और असाधारण
उसकी गहराई
रोशनी को थाम कर रखती है
विश्वास है उनके होने से
मिटा कर तमस
रोशन होगा
ये जहाँ
रोशनी और दीप का अटूट साथ
जो भयावह अंधकार को मिटा
एक उम्मीद को रोशन करता है
ऊर्जा व ऊष्मा से सराबोर
विश्वसनीयता लिए
निष्कपट साथ
माटी के दीप और रोशनी का अलबेला साथ
जैसे मैं और मेरे अंतस में रोशन तुम।

मन

मेरी देह में
बसा मेरा मन
जो मंदिर है
मेरी परम शक्ति का
तुम्हें सिर्फ़
मौका दे सकता है
तुम्हारी पात्रता के हिसाब से
हर बार मेरे दिल को
नहीं रख सकता
तुम्हारे कदमों में
तोड़ने के लिए।

सिलसिला

मेरे आँसू तुम्हें चिंतित करते हैं
द्रवित भी होते हो तुम
मेरा दर्द देखकर
और तुम्हारे साथ का अहसास
दे देते हो मुझे
मैं मुस्कुरा उठती हूँ
क्योंकि मैं मुस्कुराना चाहती हूँ
तुम्हारा हाथ थाम चलती हूँ
उस अलौकिक दुनिया में
फिर एक लौकिक आवाज़
पुकारती है मुझे
जो कर जाती है फिर से मेरी
आँखें नम...
यही सिलसिला चल रहा है
कई सदियों से...।

कान्हा

कान्हा जब तुम दूर देस में
बाँसुरी बजाते हो
जब तुम एक राग में एक गीत गाये जाते हो
उस तान को सुन मैं तुम्हें महसूस कर जाती हूँ
और तुम भी मेरी धड़कन से वो ताल मिलाते हो
गुनगुनाते रहा करो मेरी धड़कनों के साथ सदा
जानते हो तुम भी मेरे अंदर कितनी सदियां जी जाते हो।

हार

कल मेरे आँसुओं को
अपनी हथेली में थामा था तुमने
उन मोतियों से इतनी सुंदर कलियां खिला दी
ज़िंदगी से हार कर
रंग बिरंगे सपने बह गए थे आँखों से
तुमने उस हार को अपना कर
खुद की माला बना दी...

अंशु हर्ष

विचारों के सैलाब की एक राह,
मुझे मेरे ही अंदर लिए जा रही है
तलाश रही हूँ इस भाव को
एक शब्द देना चाहती हूँ
इस गहरे लगाव को
अटूट विश्वास, निस्वार्थ श्रद्धा को
प्रेम का एक रूप है शायद जो मुझे
आध्यात्म की ओर लिए जा रहा है...
'प्लेटोनिक लव' कह देती हूँ इसे।

अंशु हर्ष का जन्म जयपुर में हुआ मूलत: वो जोधपुर की निवासी है। स्कूली शिक्षा राजस्थान के कई शहरों में हुई। पापा पुलिस अधिकारी रहे तो जहाँ भी ट्रांसफर होता वहाँ के स्कूल में उन्हें पढ़ने का मौक़ा मिला और हर दो तीन साल में बदलते स्कूल और जगहों को वो अपनी ज़िन्दगी का सबसे अच्छा अनुभव मानती है क्योंकि, ज़िन्दगी से कुछ सीखना चाहते हो तो सफर पे निकल जाएं, ज़िन्दगी जीना सीखा देगी। पिछले 10 वर्षों से वो लेखन और साहित्य के क्षेत्र में सक्रिय है और 7 वर्षों से सिम्पली जयपुर मैगज़ीन व वौइस् ऑफ जयपुर की पब्लिशर और संपादक है। जयपुर लिटरेचर फ़ेस्टिवल में 2015 व 2019 में बतौर स्पीकर शिरकत कर चुकी है। कविताएं लिखने की शौकीन अंशु हर दिन नई कविता रचती है। ज़िन्दगी के अनुभव, घटनाएं, मुलाकातें और तस्वीरें कुछ नया लिखने के लिये प्रेरित करते है। 2013 में पहला कविता संग्रह 'शब्दों का समंदर' प्रकाशित हुआ 2019 में दूसरा संस्करण प्रकाशित हुआ।

मुक्ताकाश 51 कविमन संग्रह का सम्पादन 2018 में एक नया मुक्ताकाश दस कविमन संग्रह का सम्पादन 2020 में किया। पंडित विजय शंकर मेहता-जीवन प्रबंधन गुरु उज्जैन की किताब 'कोरोना जंग की सप्तपदी' का संपादन 2020 में अंशु हर्ष द्वारा किया गया।

आवरण चित्रकार **पद्मश्री शाकिर अली** का जन्म 1956 में हुआ, राजस्थान विश्वविद्यालय से स्नातक शाकिर अली ने 15 वर्ष की उम्र में पेंटिंग करने की शुरुआत की थी। उनकी प्रेरणा उनके दादा सैयद हामिद जो खुद एक पेंटर थे और उनके पिता एस साबिर अली कलाओं का संग्रह करते थे। उन्होंने गुरु पद्मश्री राम गोपाल विजयवर्गीय व बेद पाल शर्मा से सीखना शुरू किया। देश विदेश में ख्याति अर्जित कर कई बड़े सम्मान से नवाज़े गए जिनमें 1993 में तत्कालीन राष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा द्वारा नेशनल अवार्ड और 2013 में पद्मश्री सम्मान भारत के गौरव के रूप में अंकित है। इन दिनों शाकिर साहब मॉर्डन मिनिएचर पर काम कर रहे हैं व आवरण पर नज़र आती पेंटिंग का थीम 'स्प्रिचुअल पावर ऑफ़ वुमन' है।

बोधि जन-संस्करण
आवरण : पद्मश्री शाकिर अली

₹ 150.00
ISBN : 978-93-90827-61-9
9 789390 827619

कविता संग्रह

Scan QR Code to Purchase at amazon

facebook.com/bodhi.prakashan instagram.com/bodhiprakashan bodhiprakashan@gmail.com 96605 20078